द्वितीय अध्याय

ब्रज संस्कृति में संगीत की अहम भूमिका

2.1 लोक उत्सव शब्द का विवेचन

2.2 ब्रज लोक संस्कृति में उत्सव गीत

2.1 लोक उत्सव शब्द का विवेचन

लोक उत्सव शब्द लोक और उत्सव, इन शब्द से मिलकर बना है। लोक वह स्थान है, जहाँ सृष्टि का निवास है। जहाँ एक सामान्य मनुष्य, सृष्टि के अन्य घटकों यथा–प्रकृति, पशु–पक्षी और जीव–जन्तुओं के साथ ही निवास करता है। वह इसी प्रकृति के साथ ही जीता है, इसी से तादात्म्य स्थापित कर अपना समग्र जीवन–यापन करता है। यह शब्द केवल नगरीय सभ्यता से ही सम्बन्धित नहीं बल्कि समग्रता का सूचक है, इसमें पढ़े, अनपढ़े, विकसित, अविकसित, आदिम आदि सभी मनुष्यों का वास है। यह समग्रता का परिचायक है। उत्सव शब्द का अर्थ है पर्व, हर्ष या आनन्द का अवसर, हर्ष नृत्य आदि है।[1] लोक में निवास करने वाले मनुष्य या लोकजन जिन उत्सवों को पारम्परिक रूप से मनाते है– वे ही उत्सव लोक–उत्सव कहलाते है।

मानव जीवन इस सृष्टि का एक विलक्षण पक्ष है। वास्तव में सृष्टि की रचना मानव एवं मानवेतर अनेक, तत्वों से मिलकर होती है। यह भी सत्य है कि इन समस्त तत्वों का आपस में अन्योन्याश्रित सम्बन्ध भी है। वैसे तो सृष्टि की रचना पाँच मूलाधार विभिन्न शास्त्रों में वर्णित है– जल, थल, वायु, आकाश एवं अग्नि। किन्तु इन पांच मुख्य तत्वों के ही अंग है। इनमें मनुष्य श्रेष्ठ है, क्योंकि वह अपनी शारीरिक रचना के साथ ही मस्तिष्क के उपयोग के कारण इन सभी में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करता है। मानव अपने विकास क्रम में धीरे–धीरे जैसे–जैसे बढ़ता रहा, उसने अपने जीवन–यापन या रहन–सहन के तौरतरीकों को अपने दृष्टिकोण से सुव्यवस्थित करना प्रारम्भ किया। अपनी इस विकास यात्रा में मानव ने पशुओं से ऊपर उठकर अर्थात् आहार, निद्रा, भय और मैथुन से परे अनेक अन्य कार्य भी करने आरम्भ किये, जो उसे मनुष्यत्व प्रदान करते है। इन कार्यों में उसने सामाजिक होना सीखा, व्यवस्थित होना सीखा। कर्म करने के साथ ही मनोरंजन करना सीखा। वह हंसने लगा, प्रसन्नता होने पर। वह रोने लगा, दुःखी होने पर वह सोचने लगा, विचार करने, चिन्तन करने

लगा। इन्हीं चिन्तन की गहराइयों के वशीभूत उसने कल्पना करना सीखा, विश्वास और इस भय ने उसे विभिन्न आयोजनों को सम्पन्न करना सिखाया। ये विभिन्न आयोजन ही उत्सव और त्यौहार कहलाऐं। इनमें कहीं न कहीं प्रकृति का समावेश है। इसमें ही अलौकिक सत्ता या देव, भगवान, भूत–प्रेत के प्रति आस्था, विश्वास या भय का भी समावेश सम्मिलित है।

लोक उत्सव वस्तुतः वे उत्सव है, जो एक सामान्य मनुष्य अपने विश्वास, अपनी श्रद्धा आस्था के वशीभूत हो पारम्परिक रूप से मनाता है। इन उत्सवों में विश्वास, श्रद्धा की प्रधानता रहती है। इनमें तर्क को कोई भी स्थान नहीं दिया जाता। वे तर्कातीत है, ये न जाने कब से पारम्परिक रूप से चल रहे है। लोक उत्सव का तात्पर्य है वे उत्सव, जो किसी एक पढ़े–पढ़ाये चिन्तनपरक पक्षों से सम्बन्धित नहीं होते। वे समग्र लोक मानस का प्रतिनिधित्व करते है इसीलिये इन्हें लोक उत्सव कहा जाता है।

वस्तुतः लोक जीवन की स्वाभाविकता और अनौपचारिक जीवन पद्धति दी उसे सहज और सर्वजन ग्राह्य बनाती है– ''लोक जीवन की सबसे बड़ी विशेषता उसकी स्वाभाविक होती है। इसके असली रूप को जानने के लिये हमें लोक–जीवन के अध्ययन की महती आवश्यकता है। यह लोक जीवन किसी भी जाति की पृष्ठ भूमि और मूल प्रेरणा स्थल है।[2] इसी सहजता के कारण लोकजन जिन उत्सवों का आनन्द लेता है, उनमें कहीं बनावटीपन या औपचारिकता नहीं होती।

वस्तुतः इन लोकोत्सवों का प्रारम्भ हमारे विश्वास से होता है चाहे वह विश्वास राम का हो, कृष्ण का हो, देवी का हो, शिव का हो, गणेश का हो अथवा अन्य देवी देवता का। चाहे वह विश्वास सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, जल, आकाश, अग्नि का हो अथवा देवतुल्य मान लिये गये सर्प, सिंह आदि मानवेतर प्राणियों का। विद्वान साहित्यकार प्रभुदयाल मीतल के अनुसार – ''हमारे प्रायः सभी उत्सव त्यौहार प्रकृति–पूजा और प्रकृति–परिवर्तन पर आधारित है। सृष्टि के

आदिकाल से ही मानव समुदाय प्रकृति पूजा करता आया है। सूर्य, चन्द्र, आकाश, ऊषा, अग्नि, जल आदि को देवता मानकर उनकी उपासना करना प्रकृति पूजा से ही सम्बन्धित है।''[3]

मानव ने अपने–अपने परिवार व कुटुम्ब के मंगल व सुख की कामना के लिये भी विभिन्न उत्सवों को मनाना प्रारम्भ किया। ''दुख और सुख की विरोधी परिस्थितियों में जीवन का समस्त स्थापित करने के लिये मनुष्य ने आमोद प्रमोद की सृष्टि की।''[4]

उत्सवों को मनाने का उद्देश्य कहीं न कहीं लोक मंगल की कामना है। सम्बन्धित देवी देवता आदि को प्रसन्न करने के लिये और उनसे मनवांछित फल या वरदान प्राप्त करने के उद्देश्य से ही ये लोकोत्सव प्रचलन में है। यह बात अलग है कि फिर धीरे–धीरे इन्हें मनोरंजन रूप भी प्रदान कर दिया गया। जैसे– दीपावली, गणेश और लक्ष्मी को प्रसन्न करने के उद्देश्य से मनाई जाती है, परन्तु उस पर्व पर आतिशबादी चलाना, प्रकाश करना, विभिन्न पकवान बनाना आदि उस पर्व को मनोरंजक बनाता है। स्त्रियों का नवीन वस्त्राभूषण धारण करना, लोकगीतों का गायन, नृत्य–संगीत आदि सभी पक्ष इन उत्सवों को मनोरंजक बनाने की एक प्रक्रिया के विशिष्ट अंग है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, रामनवमी आदि हो या करवाचौथ, अहोई अष्टमी आदि पर विभिन्न प्रकार ही साज सज्जा, उमंग और उत्साह को बढ़ाती है। इन त्यौहारों को मनोरंजक और उत्साहवर्धक भी बनाती है। प्रायः वर्ष भर वे हर मास किसी न किसी रूप में हम विभिन्न त्यौहार उत्सव मनाते है।

ये उत्सव पारम्परिक तो है ही, इनके मूल तत्व या इनके बीच हमें विभिन्न शास्त्रों का वेदों में भी प्राप्त होते है। अन्तर यह है कि जहाँ शास्त्रीय पद्धति से करती है वहीं लोक मानव इन्हीं सीधे–सादे तरीकों से मनाता है। इनमें कोई औपचारिकता का आवरण नहीं होता। ''भारत के एक निरक्षर प्रजाजन के ज्ञानकोश में भी कई वस्तुऐं ऐसी प्राप्त होती है जिनका सम्बन्ध

वेदकालीन परम्परा से जुड़ा हुआ मिलता है। यह भारतीय जनजीवन और लोक संस्कृति की महिमा है।[5]

यह लोकोत्सव हमारी संस्कृति के परिचायक है। इनके माध्यम से हमें हमारी संस्कृति का ज्ञान होता है। हमारे पूर्वजों से लेकर हमारे वर्तमान युग तक हमने अपनी विकास यात्रा की परन्तु ये रीति–रिवाज, ये परम्परायें उसी रूप में आज भी अपना रहे है। जिस रूप में कभी हमारे पूर्वजों ने अपनाया होगा। हमारे रहन सहन के तौर तरीके, हमारे पारम्परिक पकवान, हमारी आस्था, हमारे विश्वास, हमारी पोशाक आदि। आज भी हम अपने इन उत्सवों को मनाते समय पारम्परिक रूप से वही पोशाक पहनते है, उसी रूप में पूजा करते है। उसी सम्बन्धित लोक भाषा में कथा–कहानी सुनते है, गीत गाते है।[6] लोक संस्कृति के महान विद्वान कृष्णदेव उपाध्याय इन पर्वोत्सवों को तीन भागों में विभक्त करते है– (1) व्रत (2) त्यौहार (3) मिश्रत।

किसी विशिष्ट देवता की पूजा करते समय उपवास रखकर केवल फलाहार लेना व्रत कहलाता है। ये व्रत तीन होते है– नित्य, नैमित्तक और काम्य। नित्य– जो नित्य रखते है, जैसे प्रत्येक वार को। नैमित्तक– किसी कारण या अवसर को लेकर और काम्य– किसी कामना की सिद्धी के लिये। त्यौहार में उत्सव मनाऐं जाते है, इसमें प्रसन्नता और मनोरंजन अधिक होता है, जैसे– होली, दीवाली, रक्षाबंधन, दशहरा आदि। इनके अतिरिक्त मिश्रित वे उत्सव होते है, जिनमें उत्साह भी होता है, उत्सव भी आयोजित होता और पूजा भी हो और मनोकामना की सिद्धी की लालसा भी। जैसे– रामनवमी, जन्माष्टमी, शिव चतुर्दशी आदि। हमारा यह अतीत मात्र पोथियों के पन्नों में नहीं मिलता, इसका एक बड़ा भाग अलिखित परम्पराओं और मान्यताओं, गीतों और कलाओं–कौशलों में सुरक्षित रहता है।[7]

ये परम्परायें हमारी उस मूल संस्कृति का दर्पण है, जिससे हमने इन उत्सवों को मनाना सीखा है।

2.2 ब्रज संस्कृति में उत्सव गीत –

ब्रज क्षेत्र की परम्परायें जितनी प्राचीन और समृद्ध रही है, इसका क्षेत्र भी बहुत व्यापक रहा है, इसकी भाषा भी अत्यन्त प्रभावशाली रही है। ब्रज क्षेत्र के गीतों में ब्रज वनिताओं का बहुत ही महत्व है उनके सुरीले कंठ से निकले गीत मन को प्रफुल्लित करने वाले होते है ब्रज के नारी गीतो से, उनके संगीत से, लय और ताल से प्रस्तुतीकरण और विषय वस्तु से परम्परागत मूल्यों का महत्वपूर्ण सम्बन्ध रहा है। उस पृष्ठभूमि को समझे बिना ब्रज के नारी–गीतों का सम्यक् मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

ब्रज के नारी लोकगीतों का क्रम चैत्र मास से प्रारम्भ होकर फाल्गुन मास तक चलता है। प्रत्येक माह में कुछ न कुछ पर्व ऐसे मनाये जाते है, जितनी नारी–गीतों का न्यूनाधिक रूप से प्रयोग होता है। इन पर्वों में धार्मिक, मांगलिक, सामाजिक तथा सामायिक मनो–विनोदात्मक पर्व भी होते है। अनेक पर्व ऐसे भी है जो निरन्तर सप्ताह या महीने तक चलते है, मांगलिक पर्वो में विवाह के अवसर पर आठ दस दिन तक कोई न कोई लोकाचार सम्पन्न होता रहता है और लोकाचार से सम्बन्धित गीत गाये जाते है। साथ ही धार्मिक गीतों का ब्रज में बोल बाला रहता है जिसमें 'लांगुर' अथवा 'लांगुरिया' में गाये जाने वाले देवी गीतों का एक प्रकार तथा रसिया, ढ़ोला, भजन आदि लोक गीतों की धूम ब्रज में दिनभर सी रहती है। ब्रज के कुछ लोक उत्सव गीत निम्नलिखित है–

(1) देवी गीत

बाजे तेरे अरज नगाड़े, कंकाली हो माँ।
कहाँ रे धरै है भैया अरज नगाड़े।
कहाँ रेधरै है दोऊ डंका।। कंकाली हो माँ।।
सरग धरै तेरे अरज नगाड़े, वहीं धरे दोऊ डंका।। कंकाली हो माँ।।
को लै आयौ अरज नगाड़े, वहीं धरे दोऊ डंका।। कंकाली हो माँ।।
अरजुन लाओ मैया अरज नगाड़े, भीमा लायौ दोऊ डंका।। कंकाली हो माँ।।

कौन मैया तेरो भवन बनायो, को भरि लायौ नीर।। कंकाली हो माँ।।
अरजुन जोधा भवन बनाओ, भीमा लायौ नीर।। कंकाली हो माँ।।
कौन मैया तेरो भवन बनायो, को भरि लायौ नीर।। कंकाली हो माँ।।
अरजुन जोधा भवन बनाओ, भीमा लायौ नीर।। कंकाली हो माँ।।[8]

(2)

मैया तोकूँ मन ते ध्याऊँ, मेरी अम्बै मैया,
हरे हरे गोबर अंगन लियाऊँ मुतियन चौक पुराऊँ।
गंगा जल स्नान कराऊ, पीताम्बर पहनाऊँ।। मेरी बम्बे.....
खीर–खाड़ मइया सब रस मेवा, प्रेम से भोग लगाउ।। मेरी.....
सिर मैया के छत्र बिराजै, हीरा रतन जड़ाऊँ।। मेरी.....
जो मैया कूँ निशिदिन ध्यावे, मनवांछित फल पावे।
छोड़ छाड़ दुनियाँ दारी सब, मैया के चरण दबाऊँ।।[9]

(2) <u>गणगौर गीत</u>

गौरी री गौरी खोलि किबरिया,
बाहर ठारी तेरी पूजनहारी।
गौर गनगौर माता खोलि किबरिया,
आयी बेटी बहुअल पूजन हारी।[10]

(3) <u>हनुमान जयन्ती गीत</u>

हनुमान यही विराजो आसन पे, जब तक जन राम को होय
अंग पे तिहारे सिंदूर–विराजे–विराजे लाल लगाओ होय। हनुमत.....
एक हाथ पे मुकदर विराजे–विराजे दूजे पेयर्वत होय। हनुमत.....
एक कन्धा पे राम विराजे–विराजे दूजे पे लक्ष्मण होय। हनुमत.....
बूँदी के लड्डू को भोग लागत है दो हाथ पसारे लोग हनुमत।[11]

(4) <u>एकादशी गीत</u>

भक्तन की प्यारी एकादशी, सन्तन सुखकारी एकादशी
जाकै घर में तुलसी कौ बिड़ला, तौ भोग लगायवै आयैं।

गिरधर अरे आयैं, बनवारी एकादशी भक्तन.....।

जाके घरे में ठाकुर सेवा, तौ बिगड़ी बनायबे आये गिरधारी.....

जाके घर में गऊ की सेवा, तौ विपदा मिटावे आये गिरधारी।

जाके घर में क्वारी कन्या, तौ ब्याह करायवे आये गिरधारी.....

जाके घर में बाल गोपाल, तो राम रचायवै आये गिरधारी।[12]

(5) गंगा दशहरा (गंगा गीत)

सो गंगा के किनारे आये रघुराई, सो धारा के किनारे आये रघुराई

गंगा किनारे आये रघुराई, स्नान की ठहराई

पीताम्बर की कछनी काछे, कुह पड़े चारो भाई.....

न्याय धोय जब पार पै ठाड़े, तिलक छाप की ठहराई

घिस घिस चन्दन भरी कटोरी, तिलक देत चारों भाई

तिलक लगाय जब पास पै बैठे, खान–पान की ठहराई

हरे–हरे दोनो मगद के लड्डू भोग लगायें चारों भाई, अरे परसत भाई.....[13]

(6) यमुना स्तुति

तिहारो दरस मोहे भावे श्री यमुना मैया।

श्री गोकुल के निकट बहत हो

लहरन की छवि आवै श्री यमुना मैया.....

सुख दैनी दुख हरनी सी यमुने मैया।

जो जन मन ते न्हावे श्री यमुने मैया।

वृन्दावन में रास रचौ है–

मोहन मुरली बजावै श्री यमुने मैया।

सूरदास प्रभु विहारे मिलन कौ–

जन जन के मन भावै श्री यमुने मैया।[14]

(7) देवुथान (देवउठान) एकादशी गीत

उठो देवा, जागो देवा, आंगुरिया चटकाओ देवा।

औरे कौरे धरै ऐं पायल, जीयों मेरी प्यारी सासुल उठो.....।

औरे कौरे धरै ऐं पेड़ा, जीयौ मेरे सास के बेटा उठो.....।

औरे कौरे धरे ऐ जेबर जीयों मेरे प्यारे देबर उठो.....।

औरे कौरे धरिये गिन्नी, जीयों मेरी सबरी जिठनी उठो.....।

औरे कौरे धरि में सिन्नी जीची मेरी सबरी ननदी उठो.....।

औरे कौरे धरे ऐ जनेऊ, जीयो मेरे सबरे ननदेऊ उठो.....।[15]

(8) हरियाली तीज के गीत (मल्हार)

(1)

सावन आयौ सुघड़ सुहावनो जी,

एजी कोई आई है हरियाली तीज।

बाप के घर झूला झूलती जी,

ऐजी कोई ससुर के राज झूला नाहिं। सावन.....।

अरे काहे की पटली सो भाभी तेरे बाप के जी,

ऐजी कोई काहे की पटली घर माहिं। सावन.....।

चंदन पटली बीबी मेरे बाप के जी,

ऐजी कोई काठ की पटली घर माहिं। सावन.....।[16]

(2) मल्हार

कामा में झूले झूला बहना चन्द्रमा जी,

एजी कोई झाँकी है सुख की खान।।

मन्दिर चौरासी जहाँ पर बहना बनि रहे जी,

एजी कोई महिमा अमित महान।। कामा.

चौरासी जहाँ पै तीरथ बहना बिराजते जी,

ऐजी कोई साक्षी देत पुरान।। कामा.

खम्ब चौरासी सुन्दर शोभा पा रहे जी,

ऐजी कोई अनगिनत कुण्ड प्रधान।। कामा.

धनि–धनि यहाँ की पावन भूमि को जी,

ऐजी कोई बिचरे जहाँ भगवान।। कामा.

ऊँचे–ऊँचे पर्वत मन को मोहते जी

ऐजी जहाँ सन्तन के है स्थान।। कामा.

महिमा जिसकी अति सुखदायिनी जी.

ऐजी कोई करते 'विचित्र' बखान।। कामा.[17]

(3)

सावन आयौ सुघड़ सुहावनौ जी

ऐजी कोई झूल रहे गोपाल।। सावन.....

रेशम डोरी कौ झूला बहना पड़ि रह्यौ जी

ऐजी कोई पड़ि रह्यौ अमवा की डाल।। सावन

रतन जड़ाऊ चन्दन पटली सोह रही जी

ऐजी कोई दमकि रहे हैं हीरा लाल।। सावन.....

राधाकृष्ण की शोभा बहिना लखि रहे जी

ऐजी कोई धन्य सभी गोपी ग्वाल।। सावन

ललिता विसाखा सख्यिां झोटा दैं रहीं जी

एजी कोई हो रही मन में निहाल।। सावन.....

गीत–मल्हारें बन में बहिना गूँजती जी

एजी कोई बजत ढोलक मृदु ताल।। सावन.....

बैठ विमानों में निरखत बहिना देवता जी

एजी कोई झाँकी भव्य विशाल।। सावन.....

फूलों की बरसा बहिना होती गगन से जी

एजी कोई हर्षित है दिग्पाल।। सावन.....

'विचित्र' दरस कर बहिना राधेश्याम के जी

एजी कोई करत जगत जंजाल।। सावन[18]

(9) श्रीकृष्ण जन्माष्ठमी गीत

1

आज ब्रज सकल आनन्द।

नन्द महर घर ढोटा जायौ, पूरन परमानन्द।

मंगल कलस विराजत द्वारे, गावत गीत अमंद।।

नाँचत गोपी और गोप सब, प्रगटे गोकुल–चन्द्र।

विविध भाँति बाजे बाजत है, निगम पढ़त द्विज छन्द।।

छिरकत दूध–दही–घृत–माखन, प्रफुलित मुख अरविंद।

देत दान ब्रजराज मगन मन, फूले, अंग न माँई।

देत असीस जियौ जसुमति सुत, 'गोविंद' बलि बलि जाई।।[19]

2

आज ब्रज घर घर बजति बधाइ।

जसुमति रानी ढोटा जायौ, लागत परम सुहाई।।

भादो कृष्ण पक्ष शुभ आठै, जन्म लियौ हरि जाइ।

वसुदेव–देवकी मान जगत गुरू, आनन्द की निधि पाइ।।

बरसाने ते मान–कीर्ति को, लै चले ग्वाल लिवाइ।

नाँचत–गावत करत कुलाहल, भादों मास सुहाइ।।

हरद–दूब–अक्षत–दधि–कुमकुम, सुन्दरि देत बधाइ।

रोरी तिलक हवन के माथे, मगन भऐ अधिकाइ।।

वैठि जुरे सब नन्द–भवन में, सोभा बरनी न जाइ।

नन्द महोत्सव होत भवन में, मंगल–साज सुहाइ।।

धन्य जन्म करि मानत अपनौ, मगन भऐ नन्दराइ।

'श्री विट्ठल गिरधिर' चिर जीवौ, सबहिन सुख निधि पाइ।।[20]

(10) राधाष्टमी

चलौ वृषभानु गोप के द्वार।
जन्म लियो मोहन हित स्यामा, आनंदनिधि सुकुमार।।
गावत जुवति मुदित मिलि मंगल, उच्च मधुर धुनि धार।
विविध कुसुम किसलय कोमल दल, सोभित बंदनबार।।
विदित वेद विधि विहित विप्रवरू करि स्वस्तिनु उच्चार।
मृदुल मृदंग–मुरज–भेरी–ढफ, दिवि दुंदुभि खकार।।
मागध–सूत–बंदी–चारन, जस कहत पुकार–पुकार।
हाटक–हीर–चीर–पाटंबर, देति सँभार।
चन्दन सकल धेनु तन मंडित, चले जु ग्वाल सिंगार।
(जय श्री) 'हित हरिवंश' दुग्ध–दधि छिरकत, मध्य हरिद्रागार।।[21]

(11) टेसू गीत

टेसुरा–टेसुरा घंटार बजइयो, नौ नगरी दस गॉम बसइयो,
बसि गये तीतर बस गये मोर, सड़ी डुकरिया ले गये चोर।
चोरन के घर खेती होय, खाय डुंकरिया मोटी होय।
मार सिकन्दर पहिली चोट, चोट–चोट चूल्हे की ओट।
चूल्हौ माँगे सौ सौ रोट।
एक रोट घटि गयौ, चूल्हौ बेटा लटि गयौ।
चूल्हौ ने मारी लात, वो जाय परौ गुजरात।
गुजरात में लुगाई मोटी, बो खाँय चने की रोटी।।[22]

(12) झाँझी गीत

1

झाँझी के झलोलना सखर तेरी झाँझी,
महावर तेरो फूल भइया जी के बाग में।
एलन–बेलन घेर लई भौजइया दारी,

माँ के जाये बिरन हमारे भर गोदी खिलाये।
सास के जापे लैंदी–पैंदा बेलन से लुढ़काये।
कोई फौजन में मढ़राइ फौज तौ भागी लदर–पदर,
कोई अबुक भाज्यौ जाइ लै पितंगी उड़ि चले।
कोइ कचकच तीर समाँइ तीरन छा दियौ माढ्यौ।
कोई केसूरा मरद रे कौ ब्याहु।[23]

2

माँ सांजा कहाँ ब्याहे परेबरिया, माँ सांजा कहाँ ब्याहे परेबरिया।।
बेटी असवर–परवल ब्याहे परेबरिया, माँ भाभी कैसी आई परेबरिया।
बेटी नाक चना सी, मौह मटका सौ, घूँघट में घुर्राइ परेबरिया।
माँ भाभी कित्तौ खाबै परेबरिया, बेटी थई की थई उड़ावै परेबरिया।।
माँ पानी कितनौ पीबै परेबरिया, बेटी चरस के चरस चढ़ावे परेबरिया।।[24]

(13) <u>श्री रास लीला पद</u>

1

शरद–रैन सुखदैन लखि पूरन चन्द्र अमन्द।
ब्रजगोपिन संग रास हित कीन्हो ब्रजचन्द्र।
आये मन भाये रसिक यमुना–पुलिन सहाई।
श्याम स्वामिनी धारि–मन वंशी मधुर बजाई।।[25]

2

बाँसुरी बजाई आज रंगसो मुरारी।
शिव समाधि भूल गई, मुनिजन की तारी।।
वेद भनत ब्रह्मा भूले भूले ब्रह्मचारी।
सुनत ही आनन्द भयो लगी है करारी।।
रंभा सब ताल चूकी भूली नृत्यकारीं
श्रीवृन्दावन बंशी बजी तीन लोक प्यारी।

ग्वाल बाल मगन भये ब्रज की सब नारी।

सुन्दरश्याम मोहिनी मूरत नटवर वषुधारी।

'सूर किशोर' मदन मोहन चरणों बलिहारी।।[26]

(14) गोवर्धन–पूजा पद

1

पूजत गिरि सबरे नर नारि।

मूंग भात को पर्वत रचि कै दूध बहावत धार।।

गावत सुर झीनी मिल भामिनि होवत जय जयकार।

'ललितलडैती' जेवत रूचि सूँ गिरिधर भुजा पसार।।[27]

2

करत सब गोवर्धन की पूजा।

गिरि रचि ठौर जलेबी लाडू बीच लगावत गूँजा।।

अचरज सिन्धु नहावत लखि सुख रति लक्ष्मी गिरिजा।

''ललितलडैती' कहहिं ब्रजतिय सम भाग नहीं काहू दूजा।।[28]

3

मैं तो गोवरधन कूँ जाऊ मेरे बीर नाय माने मेरो मनुआ।।

सात सेर की करूँ कढ़ैया

अरी पूरी पूआ बनाऊ, मेरे बीर नाय माने मेरो मनुआ।।

टोसा बाँध बगल में राखूँ

मैं तो मन आवै वहाँ खाऊ मेरे बीर नाय माने मेरो मनुआ।।

सात कोस की दै परिक्रम्मा

अरी मैं तौ मानसी गंगा नहाऊ मेरे बीर नाय माने मरो मनुआ।।

श्री गिरिराज पै दूध चढ़ाऊँ

अरी बर्फी कौ भोग लगाऊ मेरे बीर नाय माने मेरो मनुआ।।[29]

(15) होली पद

1

श्यामा श्याम सो होरी खेलत आज नई।।

नन्दनन्दन को राधे कीन्हों माधव आप भई।

सखा सखी भई सखी सखा भये यशुमति भवन गई।।

बाजत ताल मृदंग झाँझ ढप नाचत थेई थेई।

गोरे श्याम साँवरी राधे या मूरति चितई।।

पलटयो रूप देखि यशुमति की सुधिवधि बिसर गई।

'सूरश्याम' को वदन विलोकत उधर गई कंलई।।[30]

2

बनि आयो रे रसिया होरी को।

हाथ लकुटिया काँधे कमरिया माथे बेदा रोरी को।।

गली गिरारे ऐंडोई डोले ताकत है चित्त चोरी को।

'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छवि रसिया राधा गोरी को।।[31]

3

रसनागर श्याम रची होरी।

श्यामा रूप बने मनमोहन श्याम स्वरूप बनी गोरी।।

मन मोहन सिर लसत चन्द्रिका मुकुट विराजत सिर गोरी।

रमनि झमकि सब सखी सहेली, आय मिलीं निज–निज टोरी।।

अबीर गुलाल कुमकुमा केसर मार मची रस रंग बोरी।

ढपहिं बजावत गावत चाचरि उमड़ि चली श्रीवन खोरी।।

'मुदरा सखी' युगल छवि निरखत बार–बार लखि तृण तोरी।[32]

4

आज बिरज में होरी रे रसिया होरी रे रसिया, बर जोरी रे रसिया।।

कौन के हाथ कनक पिचकारी कौन के हाथ कमोरी रे रसिया।।

कृष्ण के हाथ कनक पिचकारी राधा के हाथ कमोरी रे रसिया।।

अपने अपने घर से निकसीं कोई श्यामल कोई गोरी रे रसिया।।

उड़त गुलाल लाल भये बादर केसर रंग कू घोरी रे रसिया।।

कै मन लाल गुलाल मंगाई कै मन केसर घोरी रे रसिया।।

सौ मन लाल गुलाल मंगाई दस मन केसर घोरी रे रसिया।।

'चन्द्रसखी' भज बाल कृष्ण छवि, जुग–जुग जीवौ यह जोरी रे रसिया।।[33]

सन्दर्भ सूची –

1 शिवराम, वामन (1966), संस्कृत हिन्दी कोश (आप्टे), मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली पृ.सं.–1030

2 सत्येन्द्र, डॉ., ब्रज लोक संस्कृति, ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा, पृ.सं.–48

3 मीतल, डॉ. प्रभुदयाल, ब्रज के उत्सव, त्योहार और मेले, साहित्य संस्थान, मथुरा, पृ.सं.–1

4 वशिष्ठ, डॉ. श्रीमती सावित्री (1987), ब्रज और हरियाणा के लोक साहित्य में चित्रित लोक जीवन, हरियाणा साहित्य अकादमी, पृ.सं.–234

5 शर्मा, डॉ. मनोहर, लोक साहित्य की परम्परा, वृन्दावन शोध संस्थान, पृ.सं.–17

6 उपाध्याय, कृष्ण देव (1988), लोक संस्कृति की रूपरेखा, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ.सं.–166

7 परमार, श्याम (1954), भारतीय लोक साहित्य, राजकुमार प्रकाशन, मुम्बई, पृ.सं.–22

8 विद्यादास, बाबा जी सं. नारायण अग्रवाल (2001), ब्रज की लोक गाथाएँ और कथागीत, वृन्दावन शोध संस्थान, पृ.सं.–398

9 चतुर्वेदी, श्री सुनैनी सं. नारायण अग्रवाल (2001), ब्रज की लोक गाथाएँ और कथागीत, वृन्दावन शोध संस्थान, पृ.सं.–398

10 सलिला ब्रज (2012–2013 अक्टूबर, मार्च), वृन्दावन शोध संस्थान, वर्ष–10, अंक–1, 2, पृ.सं.–53

11 देवी, श्रीमती विमला, श्रीमती स्नेहलता, पर्व संग्रह, वृन्दावन शोध संस्थान, पृ.सं.–116

12 सलिला ब्रज (2012–2013 अक्टूबर, मार्च), वृन्दावन शोध संस्थान, वर्ष–10, अंक–1, 2, पृ.सं.–55

13 देवी, श्रीमती विमला, श्रीमती स्नेहलता, पर्व संग्रह, वृन्दावन शोध संस्थान, पृ.सं.–122

14 वही, पृ.सं.–123

15 सलिला ब्रज (2012–2013 अक्टूबर, मार्च), वृन्दावन शोध संस्थान, वर्ष–10, अंक–1, 2, पृ.सं.–55

16 वही, पृ.सं.–54

17 शर्मा, प्रयागदत्त 'विचित्र', ब्रज के झूला, किसान ग्रुप भण्डार, पृ.सं.–21

18 वही, पृ.सं.–6

19 मीतल, डॉ. प्रभुदयाल, ब्रज के उत्सव, त्योहार और मेले, साहित्य संस्थान, मथुरा, पृ.सं.–36

20 वही, पृ.सं.–37

21 वही, पृ.सं.–38

22 अग्रवाल, स्व. रामनारायण, श्रीमती शकुन्तला चतुर्वेदी (2001), ब्रज की लोक गाथाएँ और कथागीत (भाग–2), ब्रज कला केन्द्र, मथुरा, पृ.सं.–404

23 भाटिया, मोहनस्वरूप (2004), ब्रज की लोक गाथाऐं और कथागीत (भाग–2), ज्ञानदीप, गोवर्धन रोड़ मथुरा, पृ.सं.–405–406

24 शर्मा, श्रीमती सुनीता, ब्रज की लोक गाथाऐं और कथागीत (भाग–2), पुरानी छावनी, सदर बाजार, मथुरा, पृ.सं.–406

25 दास, श्याम, ब्रज विभूति, ब्रज के भजन, श्री भक्त भाव संग्रह, हरिनाम संकीर्तन मण्डल, हरिनाम पथ, बाग, बुन्देला श्रीधाम, वृन्दावन, पृ.सं.–136

26 वही, पृ.सं.–136–137

27 वही, पृ.सं.–145

28 वही

29 वही, पृ.सं.–152

30 वही

31 वही

32 वही, पृ.सं.–156

33 वही, पृ.सं.–157